International Journal of Information Movement Vol.I Issue IX (January 2017)
Website: ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 166-171

मानव सौन्दर्य परिप्रेक्ष्य में निराला काव्य : एक विश्लेषण

अलका रानी
पीएच० डी० (हिन्दी) शोधार्थी
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

सारः

बीसवीं सदी के काव्य–रचनाकारों में हिन्दी कविता को सबसे अलग व नई ऊर्जा से संपृक्त करने वाले महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने जो सृजन किया, वह काव्य–जीवन और साहित्य के श्रेष्ठतम मूल्यों से अनुप्राणित है । निराला ने मानव सौंदय का सुन्दर और सजीव चित्रण किया है । निराला ने नारी रूप रचना में उसकी सुकुमारता, मसृणता, उज्ज्वलता, लालिमा तथा मधुरता आदि का भरपूर चित्रण किया है । नारी के युवती एवं वृद्धा दो रूपों को विवेचन का विषय बनाया है। सौंदर्य द्रष्टा कवि निराला ने पुरुष सौंदर्य का रुपायन मात्र आंतरिक सौंदर्य, गुण अथवा कर्म सौंदर्य में किया है । आंगिक या बाह्य सौंदर्य के अतिरिक्त निराला ने सौंदर्य के समेकित तथा आनुभाविक का भी वर्णन किया है । निराला ने माता–संतान के रिश्ते को शिशु–सौंदर्य में अभिव्यक्ति किया है । निर्धनता में पल रहे बालकों की सरलता, सहजता, निर्मलता एवं पवित्रता को स्वीकारा है। समस्त दलित–पीड़ितों का सुख उनका लक्ष्य रहा है जो भिक्षुक और उनके दो बालकों के सौंदर्य चित्रण में देखा जा सकता है।

1.0 प्रस्तावना

प्रकृति सौंदर्य की कभी न समाप्त होने वाली खान है जिसका सौंदर्य चुराकर या उधार लेकर मानव सौंदर्य रूप धारण करता है । मानव का प्रारंभिक रूप आदमी, विकसित रूप मनुष्य एवं पूर्ण विकसित रूप मानव है।

मानव की व्युत्पत्ति एवं अर्थ संक्षिप्त रूप में स्पष्ट करते हुए रामचन्द्र वर्मा ने लिखा है –

"मानव–वि० (सं०+मनु+अण्) मनु से संबंधित अथवा उससे उत्पन्न । पु० 1. मनुष्य । 2. मनुष्य जाति । 3. 15 मात्राओं के छंदों की संज्ञा । इनके 610 भेद हैं ।"

मानव श्रेष्ठतम प्राणी है । मानव से मानवता भाववाचक संज्ञा बनती है । मानवता के रामचन्द्र वर्मा ने 610 भेद बतलाएं हैं । मुख्य रूप से मानव के नर–नारी दो भेद हैं । नारी को पुनः युवती–वृद्धा प्रमुख दो भेद किए गए हैं । अवस्थानुसार मानव को शिशु–शैशवावस्था, बाल–बाल्यावस्था, किशोर–कैशोर्यावस्था, युवा–युवावस्था तथा बृद्ध–वृदधावस्था आदि उपभेदों में विभक्त किया जा सकता है । अध्ययन की सुविधानुसार इतने भेदों को न स्वीकार मात्र नारी–युवती, वृद्धा, पुरुष, शिशु तथा बाल को स्वीकारा है ।

2.0 नारी

नारी ब्रह्मा की दिव्य रचना एवं आदि शक्ति है । ब्रह्मा ने अपनी कला की परिपूर्णता का परिचय नारी–रचना के द्वारा दिया है। जिसका बाह्य सौंदर्य पुरुष को आकर्षित करने का प्रथम उपादान है जबकि आंतरिक सौंदर्य पर सभी लट्टू हो जाते हैं जिसका प्रमुख कारण उसके गुण–दया, माया, ममता, स्नेह, श्रद्धा, सौहार्द, अनुराग, सौजन्य, प्रशांत, मधुर, कांत, शांति, धैर्य, सहन शक्ति, उदारता तथा समर्पण आदि प्रमुख हैं । आंतरिक–बाह्य सौंदर्य से समन्वित होकर नारी ने अद्वितीय दिव्य रूप प्राप्त किया है ।

डॉ० अंजु शर्मा ने नारी एवं निराला–नारी सौंदर्य को रेखांकित करते हुए लिखा है – "नारी अपनी सीमितता में असीमता, अपूर्णता में पूर्णता, पिपासा में सजलता तथा नश्वरता में अमरता को छिपाए हुए अनादिकाल से जीवन और साहित्य की प्रेरणा स्रोत रही है जिसके परिणामस्वरूप जीवन और साहित्य का कोई भी भाग नारी–वर्णन से अछूता नहीं बचा है । नारी की इस निराली छटा पर कवि निराला का मन घनीभूत रूप से आकृष्ट है । निराला नारी की हर मनोहारी छटा पर मोहित हैं । उनकी नायिका का बाह्य रूप परंपरा से कुछ हटकर है, वह बिल्कुल नवीन है । नारी ने उन्हें जहां जैसे आकर्षित किया उसका वैसा ही वर्णन उन्होंने किया है । नारी की गौराभा, उसके खुले केशकलाप और बीच–बीच में पुरुषों का गुंफन दांतों की दुग्ध धवल पंक्ति, नयनों का बांकपन, तरुणी का अमल कोमल तनु, मधुर–मधुर अधर, संगीतमय मंद–मंद गति, मंद–मंद मुस्कान के सौंदर्य का जो स्रोत निराला की रचनाओं में फूट पड़ा है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है । निराला की नायिका तब और भी सुंदर हो जाती है जब उसका अंतर भी सुंदर होता है । निराला नारी के उस रूप पर मुग्ध हैं।"

निराला ने नारी रूप रचना में उसकी सुकुमारता, मसृणता, उज्ज्वलता, लालिमा तथा मधुरता आदि का भरपूर चित्रण किया है । नारी के युवती एवं वृद्धा दो रूपों को विवेचन का विषय बनाया है।

3.0 युवती

निराला ने युवती मुख को योजनागंध पुष्प, चंद्र, कमल, धवलशीश, कदंब, नटमुखी, नमित नयन कहा है । अधर मधुर–मधुर, सोने के पुष्प–पत्र, अरुणा भी गोरे होने के कारण मानवीय सौंदर्य को बढ़ाने वाले हैं । युवती के अधर अतीव मनमोहक चित्रित हुए हैं । कंठ को सुधाभरी या कपोत का रूप देकर काव्य सौंदर्य में वृद्धि की है । कठिन एवं पुष्ट उरोजों का आकर्षक चित्र खींचने में निराला को पूर्ण सफलता मिली है । दिव्य सौंदर्य का प्रस्तुतीकरण किया गया है।

युवती से संबंधित अंग काव्य सौंदर्य के अतिरिक्त समेकित काव्य सौंदर्य तथा प्रसाधनिक काव्य सौंदर्य में केश–कनक पुष्प, पुष्प गुंफन; नेत्र–अंजन; नासिका–लौंग; ललाट–ऊषा टीका; कपोल–कपोल पराग; मांग–सिंदूर; कंठ–हार, तारकहार; कुंचकी–गाढे रेशमी चोली, सुरभित पल्लव–चोली, कंचुकी–बंध; साड़ी–नीले रंग वाली, पीले रंग, श्वेत रंग, हरे रंग; हाथ–कंकण, मणिमय कंकण तथा कटि–करधनी आदि धारण करवा कर काव्य सौंदर्य को निराला ने चार चांद लगा दिये हैं ।

4.0 वृद्धा

नारी–शिशु, बालिका, किशोरी, युवती एवं वृद्धा सभी रूपों में सुंदर लगती है। निराला ने नारी के वृद्धा रूप का सौंदर्य चित्रित करते हुए लिखा है –

"केश–रुखे, अधर–सूखे
पेट भूखे, आज आये ।
हीन–जीवन, दीप चितवन
क्षीण आलंबन बनाये ।"

वृद्धा विधवा का चित्र निराला ने अतीव रमणीय रूप में चित्रित किया है । व्यथा की भूली कथा है –

"वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा–सी
वह दीप–शिखा सी शान्त, भाव में लीन
वह क्रूर काल–ताण्डव की स्मृति रेखा–सी
वह छूटे तरु की छुटी लता–सी दीन–"

प्रकृति के माध्यम से वृद्धा का सौंदर्य रुप रेखांकित है –

नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग–राग–आलाप,
नूपुरों में भी रून–झून, रून–झून, रून–झून नहीं,
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द सा 'चुप–चुप–चुप'

5.0 पुरुष

नारी सौन्दर्य की अपेक्षा पुरुष सौंदर्य निराला काव्य में कम उपलब्ध होता है । सौंदर्य द्रष्टा कवि निराला ने पुरुष सौंदर्य का रुपायन मात्र आंतरिक सौंदर्य, गुण अथवा कर्म सौंदर्य में किया है । इसका एक मात्र कारण यह है कि सभी को पुरुष के प्रखर एवं ओजस्वी व्यक्तित्व की ही अपेक्षा रहती है । आंगिक सौंदर्य का वर्णन भी मंत्र–तंत्र सौंदर्य वृद्धि करता है –

5.1 आंगिक सौंदर्य

आंगिक सौंदर्य में मुख, नेत्र, अधर, कर, चरण, देह, वक्ष एवं वर्ण आदि का रोचक वर्णन किया गया है

1. "देखते राम का जित–सरोज मुख–श्याम देश"
2. "कहती थी माता मुझे सदा राजीवनयन!
   दो नील कमल हैं शेष अभी, यह पुरश्चरण
   पूरा करता हूं देकर माता एक नयन ।"
3. "सांवरे का अधर मधु पान कर
   सुख से बिताऊं दिन ।"

राम के अधरों का पान करती सूपर्णखा जीवन बिताने की कामना करती है ।

4. "देखों तो उन्हें जरा,
   कितने वे सुंदर हैं – हेमकांति ।"

पंचवटी प्रसंग में सूपर्णखा द्वारा राम के वर्ण–सौंदर्य का वर्णन किया गया है ।

आंगिक या बाह्य सौंदर्य के अतिरिक्त निराला ने सौंदर्य के समेकित तथा आनुभाविक का भी वर्णन किया है । आनुभाविक में कायिक, मानसिक एवं सात्विक सौंदर्य का वर्णन किया है –

6.0 कायिक सौंदर्य

"आयी याद कांता की कंपित कमनीय गात,
फिर क्या?
निदर्य उस नायक ने
निपट निठुराई की
कि झोंको की झाड़ियों से
सुंदर सुकुमार देह सारी झकझोर डाली,
मसल दिये गोरे कपोल गोल"

6.1 मानसिक सौंदर्य

"एक बार भी यदि अजान के
अन्तर से उठ आ जाती तुम,

एक–बार भी प्राणों की तुम–
छाया में आ कह जाती तुम
सत्य हृदय का अपना हाल
कैसा था अतीत वह, अब यह
बीत रहा है कैसा काल ।
मैं न कभी कुछ कहता,
बस, तुम्हें देखता रहता ।
चकित, थकी, चितवन मेरी रह जाती
दग्ध हृदय के अगणित व्याकुल भाव
मौन दृष्टि की ही भाषा कह जाती ।"

6.2 वाचिक अनुभाव

नायक–वाणी में माधुर्य के कारण नायिका कोयल की मधुर ध्वनि सुनकर प्रियतम की याद में विस्मृत हो जाती है –

"मेरे मानस को उभारकर
अंतर्धान हो गये सत्वर
उठी अचानक मैं जैसे स्वर
कोकिल की काकली संग री ।"
"मधुर स्वर तुमने बुलाया,
छद्म से जो मरण आया ।"

6.3 सात्विक अनुभाव

निराला का व्यक्तित्व ओज, गर्व, मधुर एवं कोमल अनुभावों के सौंदर्य से परिपूर्ण है । जिसके परिणामस्वरूप उनके काव्य में पुरुषों के सात्विक अनुभावों का अनुपम चित्रण हुआ है । इन अनुभावों में रोमांच, वेपथु एवं अश्रु प्रमुख हैं ।

6.4 रोमांच

"अधर में मेरे वह
प्रथम रोमांच था
आंखों में प्रथम ही
आयी थी पूर्व स्मृति ।"

6.5 वेपथु

"सिंहरा तन, क्षण भर भूला मन, लहरा समस्त,
हर धनुर्भग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त,"

6.6 अश्रु

"युग चरणों पर आ पड़े अस्तु वे अश्रु युगल,
देखा कपि ने, चमके नभ में ज्यों तारादल ।"

6.7 आंतरिक सौंदर्य

बाह्य सौंदर्य के साथ–साथ निराला ने पुरुष के आंतरिक सौंदर्य का निरुपण भी किया है । जिसमें पुरुष–उदारता, धीरता, वीरता, गंभीरता निर्भीकता आदि अनेक दिव्य गुणों से समन्वित कर पुरुष की पूर्णता का प्रतिपादन किया है –

"ले लिया हस्त लक–लक करता वह महा फलक,
ले अस्त्र वाम कर, दक्षिण कर दक्षिण लोचन
ले अर्पित करने को उद्यत हो गए सुमन ।
जिस क्षण बंध गया बेधने को दृग दृग निश्चय,
कांपा ब्रह्मांड, हुआ देवी का त्वरित उदय–
'साधु–साधु, साधक धीर, धर्म–धन धन्य राम'
वही लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम ।"

आंतरिक गुणों के साथ–साथ यशोलिप्सा, निष्ठुरता तथा देश द्रोह आदि प्रवृत्तियों के चित्रण द्वारा काव्य–सौंदर्य को बढ़ाया है । साथ ही आंगिक मनोहरता, मधुर मुस्कान, अपूर्व व्यक्तित्व, प्रिया वियुक्त विदग्ध हृदय को लिए हुए चरित नायक श्री रामचन्द्र का पुरुष रूप में सौंदर्य के आलौकिक प्रतिमान की निराला ने स्थापना की है ।

7.0 शिशु

मानवावस्था का प्रथम चरण शिशु की शैशवावस्था होती है। इस अवस्था में शिशु का सीधा संबंध परमात्मा से होता है उसका कार्य दूध–पीना, खाना एवं सोना होता है । अधिकांश समय सोने में व्यतीत करता है । चिंतामुक्तता उसे सदैव आनंदमय बनाये रखती है।भोलापन सौंदर्य का अनिवार्य अंग है । भोलापन शैशवावस्था तक ही रहता है । शिशु–सौंदर्य में उसका हंसना–रोना दोनों ही प्यारा होता है । माता–संतान के रिश्ते को अभिव्यक्ति प्रदान करना सरल नहीं है । निराला ने इस कार्य में भी सफलता प्राप्त की है–

"शिशु पाते हैं माताओं के,
वक्षस्थल पर भूला गान
माताएं भी पाती शिशु के
अधरों पर अपनी मुस्कान ।"

निराला ने पुत्री सरोज के अधरों पर खेलती हंसी–सौंदर्य का दिव्य रूप प्रस्तुत किया है । उसका खिल–खिलाकर हंसना, उछलना– कूदना इतना भाता था ।

8.0 बाल सौंदर्य

निराला ने हाथ फैलाए भीख मांगने वाले बच्चों, भूख से सूखे होंठ सड़कों के किनारे जूठी पत्तल चाट रहे बच्चों का अतीव मार्मिक चित्र उकेरा है –

"साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,
बांए से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया–दृष्टि पाने की ओर बढाए ।
भूख से सूख ओंठ जब जाते
दाता–भाग्य–विधाता, से क्या पाते?
घूंट आंसुओं के पीकर रह जाते ।
चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी है अड़े हुए ।"

निर्धनता में पल रहे भिक्षुक के दो बालकों का निराला ने हृदयग्राही चित्र अंकित किया है । सीधे–सादे बालकों के कोमल शरीर और मनोहारी बाह्य सौंदर्य को महत्व न देकर उन्होंने बालकों की सरलता, सहजता, निर्मलता एवं पवित्रता को स्वीकारा है।

9.0 निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि निराला ने नारी के प्रायः सभी रूपों का चित्रण किया है । उन्होंने नारी–आत्मा को अधिक महत्व दिया है । नारी उनके निकट औचित्य की सीमाओं में रहती हुई रमणी, पुरुष की प्रेरणादायिनी एवं संकट में सहायिका तथा उद्‌बोधिका रूप में प्रस्तुत हुई है । नारी के प्रति निराला के हृदय में आकर्षण के साथ–साथ आदर सत्कार की भावना है । नारी के प्रति निराला की असीम संवेदना है । जननी एवं मां के रूप में निराला ने चाहे भारत माता की वंदना की हो या शक्ति या श्यामा की उपासना की हो वे सदैव दीनता– क्लीवता में मुक्ति के अभिलाषी हैं । उन्होंने अपने गीतों में कभी व्यक्तिगत सुख की कामना नहीं की है। समस्त दलित–पीड़ितों का सुख उनका लक्ष्य रहा है जो भिक्षुक और उनके दो बालकों के सौंदर्य चित्रण में देखा जा सकता है । इसी प्रकार की कविताएं 'वह तोड़ती पत्थर', 'मजदूरिन', तथा 'विधवा' आदि कविताओं का सौंदर्य विशेष उल्लेखनीय है ।

10.0 संदर्भ

1 पं० सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, पंचवटी–प्रसंग, परिमल, पृ० 241
2 पं० सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, अनामिका, राग–विराग, पृ० 103
3 पं० सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, बेला, राग–विराग, पृ० 135
4 पं० सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, भिक्षुक, परिमलए पृ० 125
5 पं० सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, निराला रचनावली, राग–विराग, पृ० 1/166–167, 2/406
6 पं० सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, परिमल (पंचवटी), पृ० 62, 119, 242
7 पं० सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, अनामिका, राग–विराग, पृ० 93, 94, 1/101
8 पं० सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, राम की शक्ति पूजा, अनामिका, राग–विराग, पृ० 94–95, 103
9 पं० सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सांध्य काकली, राग–विराग, पृ० 161
10 राम चंद्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश (पहला खंड), पृ० 263
11 राम चंद्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश (चौथा खण्ड), पृ० 340